Impact Factor – 6.261 • Special Issue - 145 • Feb. 2019 • ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

One Day National Seminar On

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI AND HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

... Organized by ...

Ajantha Education and Military Preparatory Institute, Aurangabad's

Indraraj Arts, Commerce & Science College, Sillod,

Dist. Aurangabad - 431112 (M.S.)

... Guest Editor ...

Dr. P. P. Sharma

Principal

... Chief Editor ...

Dr. Dhanraj T. Dhangar

... Executive Editor ...

Dr. S. S. Chouthaiwale (English)

Dr. A. T. More (Marathi)

Dr. P. S. Patil (Hindi)

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Co-ordinator
IQAC

PRINCIPAL

कहानियों में दलित एवं उनकी समस्याओं का चित्रण हुआ है। जो कि पहले ही कहा है की प्रेमचंद हिंदी के पहिले कथाकार है जो दलित पात्रों के जरिए दलितों की व्यथा-कथा कहते हैं। उन्होंने यह व्यथा अपने कथाओं में भी चित्रित की है। उनकी 'दुध का दाम', सौभाग्य के कोडे, ठाकुर का कुँआ, सदगती, कफन' आदि कहानियाँ यह दलित चित्र प्रस्तुत करती है। इस प्रकार हिंदी कथा साहित्य इस तरह के प्रसंगों से भरापड़ा है, जिनमें ज्यादातर दलित स्त्रियाँ सवर्णो की अधीन नजर अती हैं। कुछ इस तरह की कहानियाँ भी मिलती है। षिवप्रसाद सिंह की कहानी 'श्रृंखला' अलग-अलग जाति के स्त्री-पुरुष प्रेम संबंध तथा धर्मगुप्त की 'क,ख,ग से आगे' इस कहानी में छात्रवृत्ती का उपयोग किस प्रकार होता है, इसका चित्रण किया गया है।

साथ ही दलित साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों में से एक ओमप्रकाष वाल्मीकि है। इनकी हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भुमिका रही। ये कुछ समय महाराष्ट्र में रहे वहाँ के दलित लेखकों के संपर्क में आए उनकी प्रेरणा से उन्होंने वंचित वर्गो की समस्याओं पर ध्यान आद्रष्ठ किया। इनकी 'बिरम की बहु' इस कहानी की नायिका संतानोत्पति में ठाकुर बिरम की बहु एक वाल्मीकि युवक के साथ सहवास करके गर्भधारण करती है, किंतु बाद में ऐसा व्यवहार करती है, जैसे उसे जानती पहचानती न हो। साथ ही उन्होंने अपनी आत्मकथा में भी दलित समस्याओं को उजागर किया है।

राहुल सांद्रत्यायन ने 'प्रभा' कहानी में अष्वघोष के माध्यम से भारतीय वैदिक धर्म की शोषणमूलक नीति की आलोचना तथा जातिवाद का विरोध किया है।.इनकी 'सुमेर' नामक कहानी का नायक सुमेर विद्रोही विचारों का है। वह गांधीजी के दलित उध्दार के कार्य को ढोंग मानता है। दलित समस्याओं के चित्रण में पुष्पा सक्सेना की 'एक चिंगारी छोटीसी' में बचपन में आर्थिक विपन्नता के कारण बुट पॉलिश करनेवाला राजु तिरस्कार का पात्र होता है, किंतु इससे प्रोत्साहित होकर टूटने के बजाए वह आगे बढ़ता है। अपमान से उबरने और बड़ा आदमी बनने की लालसा के साथ वह पढ़ता है और एक दिन आई-ए-एस बनता है। इसी प्रकार उदय प्रकाष की कहानी 'टेपचु' का नायक उस दलित किंतु अदम्य जिजीविषावाले व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अन्याय के विरुध्द उठ खड़ा होता है। मुद्राराक्षस की 'फरार मलावा राजा से बदला लेगी' और रमाणिका गुप्ता की 'बहुजुठाई' भी सार्थक कहानियाँ है। जो दलितों को शोषण के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित करती है।

दलित कथाकारों की कहानियों में मोहनदास नैमिषराय की 'अपना गाँव', ओमप्रकाष वाल्मीकि की 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ', दयानंद बटोही की 'सुंरग', कुसुम वियोगी की 'अंतिम बयान', सुरजपाल चव्हान की 'परिवर्तन की बात' साथ ही शैलेंद्र सागर द्वत 'गुलईची', मदन मोहनद्वत 'इंतजार के बाद', रमेष उपाध्याय द्वत 'माटिमीली', अरूण भारती द्वत 'गटर', ज्ञानप्रकाष विवेक द्वत 'तलाश', संजीव द्वत 'घर चलो दुलारी बाई', 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' तथा मदन मोहन द्वत 'इंतजार' आदि कथा साहित्य में दलितों के व्यथा की अभिव्यक्ति हुई है। बीसवी शताब्दी के हिंदी कथा साहित्य का यह उज्वल पक्ष है कि, कुलिनता और आभिजात्यता की परिधी से बाहर निकलकर उसने समाज के हाशिए पर पड़े मनुष्य की पीड़ा और दर्द को समझने की चेष्टा के साथ-साथ अपनी अस्मिता के लिए उसके संघर्ष को भी अभिव्यक्ति दी है। इस प्रकार हिंदी कथा साहित्य में दलित अभिव्यक्ति हुई है।

वर्तमान काल में हम विकास के चाहे जितने भी गुणगान गाते रहें, पर इस तथ्य को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि, आज भी भारत में दलितों की स्थिति सराहनीय नही है। सदियों से दबा कुचला समाज अब उपर उठ रहा है और उनमें चेतना का पुनर्जागरण हो रहा है। इसलिए इनके भविष्य के बारें में आषा की जा सकती है और आनेवाला कल यह उज्वल ही होगा क्योंकि, यह समाज डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, महात्मा फूले, शाहु के विचारों पर चल पड़ा है। इसलिए कहा जा सकता है कि, 'दलित चेतना' पीड़ित, शोषित, उपेक्षित और मानव अधिकारों से वंचित पूरे 'दलित' वर्ग को अवनति से प्रगति की ओर ले जाने का मार्ग है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. हिंदी साहित्य कोश (भाग एक)- डॉ. धीरेन्द्र वर्मा संपादित
२. दलित साहित्य का सौंदर्यषास्त्र - ओमप्रकाश वाल्मीकी
३. इक्कीसवीं सदी में दलित अंदोलन - डॉ.ज़यप्रकाष कर्दम
४. प्रेमचंद:विचारधारा और साहित्य -डॉ.बालकृष्ण पाण्डेय.
५. दसवे दशक के हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना - वसाणी कृष्णावंती पी.
६. दलित विमर्श के विविध आयाम - वीरेन्द्रसिंह यादव.

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 4

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका
PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-19 VOLUME-1 IMPACT GIF-1.7216, SJIf-6.154 ISSN-2454-6283 जनवरी-मार्च,2020

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड
९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक
अनिल जाधव,
मुंबई

पत्राचार हेतु पता->
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०५

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-1 VOLUME-1 IMPACT GIF-1.7216, SJIf-6.154 ISSN-2454-6283 जनवरी-मार्च,2016

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,

मुबई

पत्राचार हेतु पता->

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०५

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (M.S.) Estd. 1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

अ नु क्र म णि का

1.अनुवाद का स्वरूप एवं प्रक्रियाँ–डॉ. बेवले ए. जे.....
2.धर्मवीर भारती की काव्यवृत्ति एवं काव्य गुण–गौरव त्रिपाठी.....
3.विकास बनाम विनाश : 'डूब' और 'पार' के विशेष संदर्भ में–डॉ इन्दु पी एस,.....
4.समकालीन हिंदी कविता में पारिस्थितिक बोध– डॉ.सी. एस. सुचित्.....
5.स्वतः आत्मबोध : एक अध्ययन–माधवी तिवारी.....
6. समकालीन हिन्दी कविता में बदलते राजनीतिक संदर्भ–महेष एस.....
7.राष्ट्रीय चेतना के कवि माखन लाल चतुर्वेदी– डॉ.संगीता मलिक.....
8–'21 वी सदी का हिन्दी गद्य साहित्य 'स्त्री विमर्श' के संदर्भ में।'रेडिओ नाटक 'ऊषा'–प्रा.डॉ. संजय व्यंकटराव जोश.....
9. अस्मिता की तलाश और दलित–प्रो. संजय एल. मादार.....
10.The Position of SCL Literature in Education and its Translation into English Language.-Dr. Rajend
11.समकालीन कथा साहित्य में किन्नर विमर्श:'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा'–प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वाघ.....
12.दुष्यन्त कुमार की कविताओं में देश की दशा पर व्यथा–उमाकान्त.....
13.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन–वन्दना गुप्ता.....
14.मध्य प्रदेष में कबीरपंथ की धर्मदासी षाखा कीऐतिहासिक पृश्ठभूमि एवं महत्वपूर्ण स्थलः अध्ययन–उदय अढ़ाऊ.....
15. असगर वजाहत की कहानियों में लोकतंत्र–डॉ विषणु तंकप्पन.....
16.दलित साहित्य में उभरते विद्रोही स्वर–कृष्णा राणी सासमल.....
17.भक्तिमती मीरा का सामाजिक मुक्ति सन्देश–डा.जया मिश्रा–प्रतापगढ़.....
18.साहित्य और समस्या समाधान का पथ–डा.जया मिश्रा–प्रतापगढ़.....
19.Occupational Aspiration among Front Benchers and Back Benchers belonging to Seni
Secondary Level-Dr. Deepa Gupta.....
20.स्वराज दल के कार्यों का ऐतिहासिक अवलोकन–डॉ.कमल किशोर.....
21.इक्कीसवी सदी की कविता में स्त्री–डॉ प्रणीता पी.....
22.जयनंदन की रचनाओं में बाल पात्र–डॉ गोपाल प्रसाद.....
23.भारत में कृषि यंत्रीकरण : एक समीक्षात्मक मूल्यांकन– डॉ. योगेन्द्र सिंह.....
24.Future of Digitalization in India-Ms. Shivangi Goel.....
25.'काल' विविध चिन्तन परम्पराओं में–शशि सिंह.....
26.ब्रिटीश कालीन मुंबई इलाखा व शिक्षणाची वाटचाल– डॉ. एच.एम. शेख.....
27.हिन्दी साहित्य में काव्यशास्त्र की भूमिका:काव्य में अलंकारों का महत्व–प्रा.डॉ.राजश्री भामरे.....
28.'कृष्ण काव्य परंपरा और विद्यापति'–डॉ0श्रीहरि त्रिपाठी.....
29.Multiple Regression Model: An Application To Women Fertility Data-Dr.Vijaykumar Kulkarni.....
30.DaśĀvatĀra Concept Symbolizes The Theory Of Evolution- Dr. Akshya Kumara Mishra.....
31.Teacher As A 'Role Model' In Formation Of Value Education-Dr. (Smt) Savita Singh.....
32.स्त्री–मुक्ति की पक्षधर संत मीराबाई का काव्य–डॉ.विजय शिवराम पवार.....
33.'हिंदी साहित्य में दलित विमर्श'–प्रा. हंबीरराव मारुती चौगले.....

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Dist. Parbhani Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist Parbhani

32.संत कबीर के काव्य की प्रासंगिकता

प्रा. डॉ विजय शिवराम पवार
श्री गुरू बुद्धिस्वामी महाविद्यालय,पूर्णा (ज) जि. परभणी

संपूर्ण भक्तिकाल में निर्गुण काव्यधारा के अंतर्गत कबीरजी ही ऐसे संत हुए हैं, जिनके काव्य में समाजदर्शन की सुंदर अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। इनकी विशेषता है कि काव्य पूर्ण प्रासंगिकता के साथ दृष्टिगोचर होती है। आधुनिक समाज के भीतर भक्तिकालीन अंतर्विरोध जिस गति से खुलकर प्रकट हो रहे हैं, जैसे की जाति, धर्म और आर्थिक विषमता संदर्भ में टकराहटें बढ़ रही हैं, ऐसे समय मे संत कबीर के काव्य की प्रासंगिकता उतनी ही बढ़ती जा रही है। व्यवस्था के तामाम विरोधों के बावजूद यह जनकवि बहुत लोकप्रिय है। कबीर का जीवन जितना गहन और सूक्ष्म है, उतना ही उनका समाज दर्शन विस्तृत और व्यापक है। वे इस युग के ऐसे संत कवि है, जिन्होने सामाजिक विषमरुप से समाज में जो जातिगत विषमता थी, उसको दूर करने में जो भूमिका निभाई वह उनके किसी भी समकालीन कवि में नज़र नहीं आता। कबीर ने समाज में प्रचलित अस्वस्थ परंपराएँ, भेद–भाव की दृष्टि और बुराईयों को भी समाप्त करने का यथा संभव प्रयास किया है। बडी कठोर वाणी में संत कबीर ने युगीन समाज का मार्गदर्शन किया है। कठोर और कटू वाणी का प्रयोग करना कबीर के लिए आवश्यक था। क्योंकि उस समय में समाज में हर दृष्टि मे इतनी विषमता थी कि, बिना कठोर और कटू वाणी से तत्कालीन पंडित और मुल्लाओं को बड़ी चोट पहूँची, पर कबीर ने इसकी चिंता नही की। क्योंकि भक्तिकालीन समाज–व्यवस्था के सामंती अत्याचार, धार्मिक रुपों में प्रकट होते थे। अतः धर्म कोई समान्य मानवीय व्यापार नहीं था। यह शोषण का एक तर्क बन गया था। तीर्थों, आश्रमों तथा मंदिरों के प्रति श्रध्दाशील होना, कर्मकांड, छुआछूत एवं बाहयाडंबरों को जीवन में प्रमुखता मिलना, पंद्रहवीं शताब्दी के युरोपीय पोप की भाँति ब्राम्हणों तथा मुल्लाओं की धार्मिक ठेकेदारी मजबूत हो जाना यह सभी आज की सामजिक प्रासंगिकता को दर्शाते हैं।

कबीर का काव्य भले ही काव्यशास्त्र की दृष्टि से शास्त्र शुध्द न हो, पर समाज दर्शन की दृष्टि से वह आज भी प्रासंगिक है। कबीर ने सामाजिक विसंगतियों को देखकर केवल उपदेश नही दिया, अपितु युगीन स्थितियों को परिवर्तित करने का भरसक प्रयास भी किया है। समाजिक स्थितियों को बदलने के लिए परिवर्तन का जो नारा उन्होने दिया वह इस युग में अन्य किसी ने नही दिया। समाज में प्रचलित उँच–नीच की झूठी मान्यताएँ जातिगत भेदभाव, वर्णाश्रम पध्दति आदि को देखकर कबीर ने अपनी चूभनेवाली वाणी में कठोर अर्थात जिसमें कहीं–कहीं पर अत्यंत प्रभावी व्यंग्य भी देखने को मिलते हैं। समाज का मार्गदर्शन करने के लिए और सही दिशा देने के लिए उन्होने मानवतावादी संदेश देने का प्रयास किया है। उन्होने स्पष्ट कहा है की इस संसार में समस्त प्राणी एकसमान है। उनका व्यंग्य मात्र तार्किक नही है, वह बौध्दिकता से परिपूर्ण है। समाजदर्शन के मद्यम से जीवन के अनुभूत सत्यों को व्यक्त करनेवाले वाणी से उन्होने समाज को भ्रमित होने से रोका है। उनके समय में अनेक ऐसे संप्रदाय थे, जो चमत्कारिक क्रियाओं से समाज को भटका रहे थे। विशेष रुप से उन्होने हठवादियों पर व्यंग्य कसा है। उन्होने कहा भी है– "कहे कबीर नर जिनि साधै, तिनकि भाति है मोहि।" इस प्रकार की अनेक उक्तियाँ कबीर के काव्य मे मिलते हैं। समाज दर्शन करते हुए कबीर स्वयं उन सिध्दातों पर चले थे। जिनपर चलने की बात उन्होने लोगों से कही है। कहा जा सकता है कि, वस्तुतः कबीर में तर्क है, पर लापरवाही नही है। आक्रोश है पर मस्ती नही, तिव्रता है, पर मृदुता नही। उनकी आक्रमक वाणी में एक रस है, एक जीवन है। कबीर ने जाना था कि अनेक साधु–संत अपनी स्वार्थवृत्ती के कारण जन सामान्य को गुमराह कर रहे हैं। इसलिए उन्होने कहा–"सो चादर सूर नर मुनि ओढिते, मैलि किनि चदरिया। दास कबीर जतन से ओढि ज्यों कि त्यों भर दिनि चदरिया॥"

कबीर यह मानने को तयार नही की जन्म के आधार पर बाम्हण श्रेष्ठ है, और अब्राम्हण कनिष्ठ। वे स्पष्ट कहते हैं कि, एक बिंदु से निर्मित पंचतत्व से युक्त इस मानव शरीर का निर्माता एक ही ब्रम्ह है। सभी की जन्म जातियाँ एक ही है। फिर कैसे कोई जन्म से छोटा और बड़ा। जिन्होने छोटे–बड़े, उँच–नीच का भेद फैलाया उनसे कबीर ने साफ–साफ पुछा–

"काहे खोजि पांडे छोति विचारा, छोत ही ते उपजा संसारा।
हमारे कैसे लहु, लहु तुम्हारे कैसे दूध, तुम कैसे बामण पांडे, हम कैसे सूत॥"

कबीर के इन्ही क्रांतिकारी विचारों के कारण कबीर का समस्त काल आज भी समाजभिमुख और प्रासंगिक है। समाज दर्शन से युक्त कबीर का काव्य वर्तमान संदर्भ में भी इसलिए प्रासंगिक है कि, उसमें युगीन सत्य की अभिव्यक्ति है। समाज के रूढ भ्रष्टता के आचरण को दूर करने का प्रयास किया है। अपने मार्ग में उन्होने सात्विकता और आचार प्रवणता पर अधिक विचार किया है। कबीर

के युग में उपभोग की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए उन्होने स्पष्ट कहा–

"सहज–सहज सबहि कहै, सहजन जिन्हे होय।
जो कबीर विषया तजै, सहज कहि जौ सोय।।"

कबीर ने समान्य जनता को नविन समाजिक क्रांति का संदेश दिया और तत्कालीन समाज में प्रचलित वर्ण व्यवस्था तथा जाति–भेद के प्रति घोर विरोध व्यक्त किया है। ऐसा नही की कबीर को सांसारिक जीवन का अनुभव नहीं था, या उनका संसार से कोई संबंध नही था, अतः ये पहले संत कवि है, जिन्होने सांसारिक जीवन में रहकर भी युगीन शोषण के विरोध में कठोर आघात किया है। उनके जीवन वृत्तांत से ज्ञात होता है कि, उनका समस्त जीवन पिछड़े, निम्न और दरिद्रय से परिपूर्ण लोगों की सेवा करने में और उन्हे संघटित और जागृत करने में ही व्यतित हुआ है। मध्ययुग की परंपरावादी समाजिक ढाँचे को तोढ़ने में कबीर का योगदान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। जिस युग में कबीर रह रहे थे। उस युगीन समाज में अंधविश्वास ढोंग, पाखंड विषमता और अंधश्रध्दा का बोल–बाला था। भगवे वस्त्र पहनकर और शरीर पर विभुति लगाकर साधु होने का ढोंग कई लोग करते थे। कबीर इस ढोंगी वृत्ति का विरोध करते है और इसलिए साधुओं की पहचान उनके ज्ञान से करने की वे बात करते हैं। कबीर ने भक्ति के द्वार प्रत्येक के लिए खोलकर सबको उसका अधिकारी बताया है। वे ब्राम्हण, वैष्य, क्षुद्र आदि में किसी भी भाँति के भेद–भाव को अमान्य कर कहते हैं, सबकी रचना उन्हीं पाँच तत्वों से हुई है, सबका शृष्टा पिता परमात्मा एक ही है। कबीर का पालन–पोषण जुलाहा नामक निम्न जाति में होने के कारण, स्वयं जाति व्यवस्था की दाहकता को उन्होंने अनुभव किया था। अतः कबीर कहते हैं कि, साधु की जाति या कुल की खोज करने के बजाए वह कितना ज्ञानी है, यह देखना चाहिए। उसके ज्ञान की कीमत आँकी जानी चाहिए न की उसकी जाति की। क्योंकि युध्द क्षेत्र में तलवार ही ढंग की न हो तो वह किस काम की? कबीर जाति–पाति को अमान्य करते हुए कहते हैं–

"जाति न पूछो साधु की, पुछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार की, पड़ा रहने दो म्यान।।"
"जाति–पाति पूछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।"

संत कबीर कहते हैं कि, पत्थर को पूजने से ज्ञान की प्राप्ति हो जाए, तो मैं पर्वत को पूजने लग जाऊँ। पत्थर की मूर्ति पूजने से तो चक्की पूजना ज्यादा अच्छा है, जिसे पिसा अनाज संसार खाता है–

"पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार।
ताते तो चक्की भली, पीसि खाए संसार।।"

संत कबीर अपने विचार कृतिद्वारा आचारण में लाने वाले समाजसुधारवादी व्यक्ति थे। ये ऐसे प्रखर बुध्दिवादी थे कि, जिनके क्रांतिकारी विचार आज भी प्रासंगिक है। इन्होने सांसारिक जीवन का आनंद लेते हुए परमार्थ की प्राप्ति का संदेश दिया। ऐसे समतावादी संत जो 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का संदेश देकर पूरे विश्व में शांति की पहल का जो संदेश दिया है, वह अनमोल एवं महत्वपूर्ण है। इनका साहित्य तत्कालीन विषमता, अराजकता, अंधश्रध्दा, धार्मिक आडंबर, जाति–पाति का खंडन करते हुए, मानवीय मूल्यों की रक्षा का जो भार उठाया है वह अतुलनीय है। इसलिए इनके समाजसुधारवादी क्रांतिकारी विचार आज भी प्रासंगिक है। वर्तमान समाज में जातियता, धर्मांधता, भ्रश्टाचार, एवं अंधश्रध्दा आदि को व्यापक पैमाने पर बढ़ते देखा जा सकता है, और इसी कारणवश कहीं न कहीं मानवीय मूल्यों का ह्रास होते दिखाई देता है। आज धर्म की आड़ में पाखंडियों की ओर से कुप्रथाओं की बाढ़ देखी जा सकती है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार होने के कगार पर दिखाई दे रहा है। और इन्हीं नैतिक मूल्यों का वैज्ञानिक दृश्टिकोण, अंधश्रध्दा निर्मुलन आदि जीवनमूल्यों की पुनर्स्थापना करने के लिए कबीर के क्रांतिकारी विचार प्रेरणादायी सिध्द हो सकते हैं। आज इनकी अमृतवाणियाँ जो पग–पग पर हमारा पथ–प्रदर्शन करती है। हमें असत्य से सत्य की ओर, पाप से पुण्य ओर पाखंड से प्रेम की ओर तथा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि, समाज दर्शन से युक्त कबीर का काव्य वर्तमान संदर्भ में भी इसलिए प्रासंगिक है कि, उसमें युगीन सत्य की अभिव्यक्ति है। समाज के भ्रष्ट आचरण को दूर करने का प्रयास भी है। अपने मार्ग में उन्होने सात्विकता और आचार प्रवणता पर अधिक विचार किया।

संदर्भ ग्रंथ–

1 कबीर दोहावली– राजश्री प्रकाशन दिल्ली. 2.हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास– बाबू गुलाबराय 3.हिंदी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल 4.कबीर– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी 5 डॉ. जयदेव सिंह, डॉ. वासुदेव सिंह–कबीर वाङमय, खंड–3 साखी

Co-ordinator